संयुक्त व्यापक कार्ययोजना (JCPOA)

प्रलिम्सि के लयि:

संयुक्त व्यापक कार्ययोजना (JCPOA), अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA), चाबहार पोर्ट, इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांज़िट कॉरिडोर (INSTC), काउंटरगि अमेरिकाज़ एडवर्सरीज़ थ्रू सैंक्शन्स एक्ट (CAATSA)।

मेन्स के लयि:

भारत से जुड़े समूह और समझौते और/या भारत के हितों पर देशों की नीतियों और राजनीति का प्रभाव, JCPOA और इसका महत्त्व।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **अमेरिका** ने मुंबई स्थति एक **पेट्रोकेमिकल कंपनी, तबिलाजी पेट्रोकेम प्राइवेट लमिटिड के खलिाफ प्रतबिंध लगाए** क्योंकि उस पर ईरानी पेट्रोलियम उत्पादों को बेचने का आरोप लगाया गया है।

- संयुक्त व्यापक कार्ययोजना (JCPOA) से **अमेरिका के बाहर निकलने के बाद वर्ष 2018-19 में पारित एकतरफा प्रतबिंधों के तहत अमेरिकी पदनाम** का सामना करने वाली यह पहली भारतीय इकाई है।

संयुक्त व्यापक कार्ययोजना (JCPOA):

- इस समझौते को **ईरान परमाणु समझौते, 2015 के नाम से भी जाना जाता है।**
- **CPOA ईरान और P5+1 देशों (चीन, फ्राँस, जर्मनी, रूस, यूनाइटेड कगिडम, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं यूरोपीय संघ या EU)** के बीच वर्ष 2013-2015 के बीच चली लंबी बातचीत का परिणाम था।
- ईरान एक प्रोटोकॉल को लागू करने पर भी सहमत हुआ जो अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के नरीिक्षकों को अपने परमाणु स्थलों तक पहुँचने की अनुमति देगा ताकि यह सुनश्चिति हो सके कि ईरान गुप्त रूप से परमाणु हथयािर वकिसति नहीं कर रहा है।
- हालाँकि पश्चिम, **ईरान के परमाणु प्रसार से संबंधति प्रतबिंधों को हटाने के लयि सहमत** हो गया है, जबकि **मानवाधिकारों के कथति हनन और ईरान के बैलस्टिकि मसिाइल कार्यक्रम** को संबोधति करने वाले अन्य प्रतबिंध यथावत रहेंगे।
- अमेरिका ने तेल निर्यात पर **प्रतबिंध हटाने के लयि प्रतबिद्धता व्यक्त** की है, लेकिन वित्तीय लेन-देन को प्रतबिंधति करना जारी रखा है जिससे ईरान का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बाधति हुआ है।
- बहरहाल **ईरान की अर्थव्यवस्था मंदी, मुद्रा मूल्यह्रास और मुद्रास्फीति** के बाद सौदे के प्रभावी होने के चलते काफी स्थरि हो गई तथा इसका निर्यात भी काफी बढ़ गया है।
- अमेरिका द्वारा **वर्ष 2018** में सौदे को छोड़ने और **बैंकगि एवं तेल प्रतबिंधों को बहाल** करने के बाद ईरान ने अपने **परमाणु कार्यक्रम को बढ़ावा** दयिा, जो वर्ष 2015 से पहले की उसकी परमाणु क्षमताओं का लगभग 97% था।

Changes agreed under Iran deal to limit nuclear programme

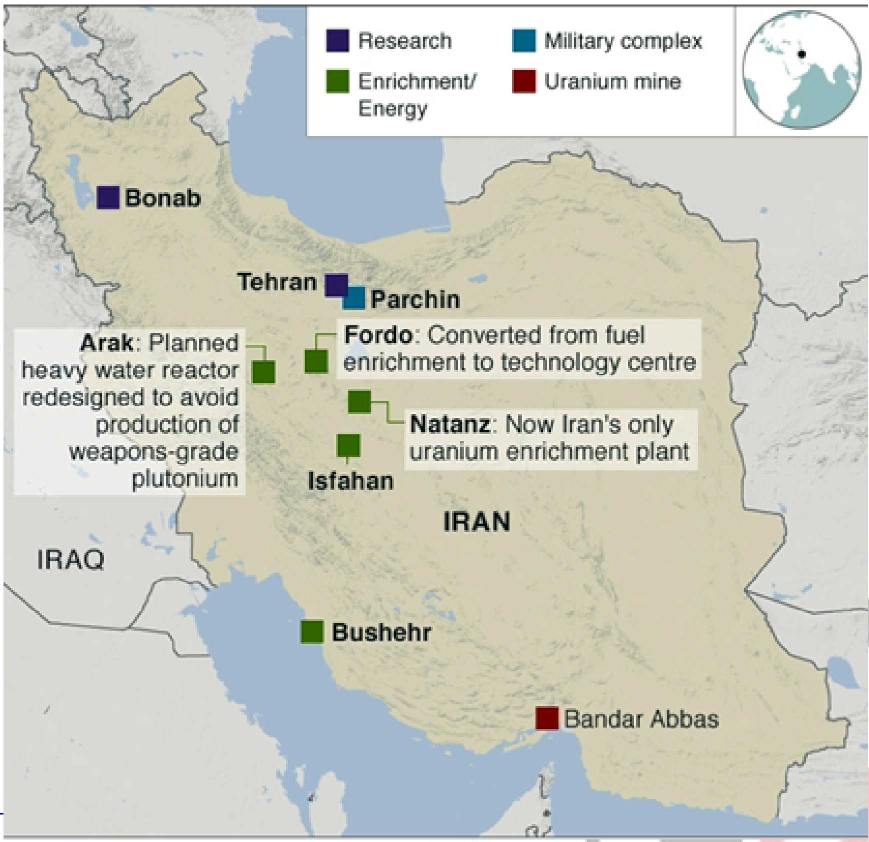

//

अमेरिका के इस सौदे से पीछे हटने के प्रभाव:

- **अप्रैल 2020** में **अमेरिका** ने प्रतिबंधों को वापस लेने के अपने उद्देश्य की घोषणा की। हालाँकि अन्य भागीदारों ने इस कदम पर आपत्ति जताते हुए कहा था, चूँकि **अमेरिका अब इस सौदे का हिस्सा नहीं है, इसलिये वह एकतरफा प्रतिबंधों को फिर से लागू नहीं कर सकता** था।
- शुरुआत में वापसी के बाद कई देशों ने **ट्रंप प्रशासन द्वारा दी गई छूट के तहत ईरान से तेल का आयात करना जारी** रखा। लगभग एक वर्ष बाद अमेरिका ने अंतर्राष्ट्रीय आलोचनाओं के दबाव में छूट को समाप्त कर दिया और ऐसा करके ईरान के तेल निर्यात पर काफी हद तक अंकुश लगा दिया।
- अन्य शक्तियों ने, सौदे को बनाए रखने के प्रयास में, अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली के बाहर ईरान के साथ लेन-देन की सुविधा के लिये एक वस्तु विनिमय प्रणाली शुरू की जिसे [व्यापार विनिमय के समर्थन में साधन (Instrument in Support of Trade Excahanges-INSTEX)] के रूप में जाना जाता है। हालाँकि **INSTEX** में केवल भोजन एवं दवा को कवर किया, जो पहले से ही अमेरिकी प्रतिबंधों से मुक्त थे।
- **जनवरी 2020** में अमेरिका द्वारा शीर्ष ईरानी जनरल **कासिम सुलेमानी** की हत्या के बाद ईरान ने घोषणा की कि वह अब अपने **यूरेनियम संवर्द्धन को सीमित नहीं** करेगा।
- **सितंबर 2022 में ईरान और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के अधिकारियों ने रिएक्टरों की निगरानी** के लिये निरीक्षकों को ईरान में वापस लाने के लिये ईरान के समझौते की संभावना पर चर्चा करने हेतु एक दौर की वार्त्ता की।
  - अमेरिका और ईरान ने भी **JCPOA** में फिर से शामिल होने पर **"अंतिम मसौदे"** के लिये यूरोपीय संघ के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से अपने पक्ष का आदान-प्रदान किया है।

भारत के लिये संयुक्त व्यापक कार्ययोजना का महत्त्व:

- **क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में वृद्धि:**
  - यदि प्रतिबंध हटा लिये जाते हैं तो बंदर अब्बास और **[चाबहार बंदरगाहों]** के साथ-साथ क्षेत्रीय संपर्क की अन्य योजनाओं में **भारत की दिलचस्पी** फिर से पुनर्जीवित हो सकती है।
  - इससे **भारत को पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह पर चीन की भूमिका को बेअसर करने में मदद** मिलेगी।
  - चाबहार के अलावा ईरान से होकर गुज़रने वाले [अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (INSTC)] में **भारत की दिलचस्पी** को भी बढ़ावा मिल सकता है, जो पाँच मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ संपर्क में सुधार करेगा।
- **ऊर्जा सुरक्षा:**
  - [काउंटरिंग अमेरिकाज़ एडवर्सरीज़ थ्रू सैंक्शन्स एक्ट (CAATSA)] से जुड़े दबाव के कारण भारत को तेल आयात को शून्य पर लाना है।
  - अमेरिका और ईरान के बीच संबंधों की बहाली से भारत को **ईरान से सस्ते तेल की खरीद करने तथा ऊर्जा सुरक्षा में सहायता** करने में

दृष्टि The Vision

मदद मिलेगी।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन 'खाड़ी सहयोग परिषद' का सदस्य नहीं है? (2016)

(a) ईरान
(b) सऊदी अरब
(c) ओमान
(d) कुवैत

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) अरब प्रायद्वीप में 6 देशों- बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात का गठबंधन है। **ईरान GCC का सदस्य नहीं है।**
- यह सदस्यों के बीच आर्थिक, सुरक्षा, सांस्कृतिक और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 1981 में स्थापित किया गया था तथा सहयोग एवं क्षेत्रीय मामलों पर चर्चा करने के लिये प्रत्येक वर्ष एक शिखर सम्मेलन आयोजित करता है।

अतः विकल्प (a) सही है।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/joint-comprehensive-plan-of-action